INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level – 2

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 4

सामाजिक अध्ययन + शिक्षण विधियाँ

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/ny6pbb

Online Order करें - https://shorturl.at/liVKO

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

सामाजिक अध्ययन

क्र.स.	अध्याय	पेज
	प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृति	
1.	सिंधु घाटी सभ्यता	1
2.	वैदिक संस्कृति	3
3.	बौद्ध एवं जैन धर्म	7
4.	महाजनपद काल	11
5.	मौर्य साम्राज्य • मौर्य साम्राज्य की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ • सम्राट अशोक का धम्म एवं अभिलेख	14
6.	दिल्ली सल्तनत एवं मुगल साम्राज्य • दिल्ली सल्तनत का विस्तार • मुगल साम्राज्य एवं राजपूत राज्यों के साथ संबंध • सल्तनत एवं मुगल कालीन प्रशासनिक व्यवस्थाएँ	19
7.	पृथ्वी राज चौहान	38
8.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	40
	विश्व भूगोल	
1.	पृथ्वी – गतियाँ • अक्षांश एवं देशांतर	60
2.	वायुमण्डल • संघटन • संरचना • पवनें एवं वायुमण्डलीय संचरण	62
3.	महासागर	65

	• ज्वार-भाटा • धाराएँ • जल थल वितरण	
4.	संसार की प्रमुख वनस्पति वन्य जीव	71
5.	राजस्थान के कृषि आधारित उद्योग	72
6.	विश्व – कृषि के प्रकार, प्रमुख औद्योगिक प्रदेश	74
	<u>भारतीय संविधान</u>	
1.	संविधान निर्माण की प्रक्रिया एवं विशेषताएँ	78
2.	उद्देशिका (प्रस्तावना)	83
3.	मूल अधिकार	85
4.	नीति निर्देशक तत्व	87
5.	मूल कर्तव्य	89
6.	सरकार का गठन व कार्य • विधायिका • कार्य पालिका • न्यायपालिका	89
7.	स्थानीय शासन • ग्रामीण एवं नगरीय • 73 वां एवं 74 वां संविधान संशोधन	111
8.	भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया एवं उसमें महिला प्रतिनिधित्व	117
9.	भारत की संघीय व्यवस्था	119
10.	केन्द्र राज्य संबंध	119
	<u>भारतीय अर्थव्यवस्था</u>	
1.	अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक	122

2.	औपनिवेशिक काल में भारतीय अर्थव्यवस्था	125
3.	उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण	127
4.	विश्व व्यापार संगठन	128
5.	निर्धनता व खाद्य सुरक्षा	129
6.	मुद्रा एवं बैंकिग • मुद्रा के आधुनिक रूप • साख की विभिन्न स्थितियाँ • स्वयं सहायता समूह	133
7.	उपभोक्ता के अधिकार – उपभोक्ता एवं उसके अधिकार	151
8.	भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास • राष्ट्रीय विकास एवं मानव विकास • राष्ट्रीय आय	153
9.	राजस्थान में कृषि एवं विपणन • कृषि उपज मंडी • सार्वजनिक वितरण प्रणाली	170
10	सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ • सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ • सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उपागम • सामाजिक अध्ययन शिक्षण में चुनौतियाँ • सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अधिगम सहायक सामग्री एवं उपयोग • सामाजिक अध्ययन शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ • निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	178

सामाजिक अध्ययन

प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृति

अध्याय – I

सिंधु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया।
- सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।
- सिंधु घाटी सभ्यता को अन्य नामों से भी जानतें हैं ।
- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिंधु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया ।
- वृहत्तर सिंधु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा ।
- सरस्वती सभ्यता भी कहा गया ।
- मेलूहा सभ्यता भी कहा गया ।
- कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा गया ।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे है। अतः इसे सिंधु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
- हड़प्पा नामक पुरास्थल सिंधु घाटी सभ्यता से सम्बद्ध है ।
- 20 सितम्बर 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।

सिंधु सभ्यता की प्रजातियाँ -

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक
- मंगोलियन – मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।
- अल्पाइन प्रजाति ।

सिंधु सभ्यता की तिथि

- कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
- ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
- मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिंधु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

सुत्कांगेडोर- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज ऑरेल स्टाइन ने की थी।

- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं ।

भारत में सिंधु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा-** राखीगढ़ी, सिसवल कुणाल, बनावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा
  रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
- माण्डी
- बड़गाँव
- हलास
- सनौली
- **गुजरात-** धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल, रोजदिख्वी, तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलों मीटर

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा** – रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज दयाराम साहनी ने की थी । खोज - वर्ष 1921 में।
  उत्खनन-
- 1921-24 व 1924-25 में दयाराम साहनी द्वारा ।
- 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
- 1946 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।

- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- भारत में चाँदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता से मिलते हैं।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया
- हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवास गृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्त्वपूर्ण हैं।

मोहनजोदड़ों - सिंधु नदी के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)

- मार्शल
- जे.एच. मैके
- जे.एफ. डेल्स

- मोहनजोदड़ों का नगर कच्ची ईंटों के चबूतरे पर निर्मित था। मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला मोहनजोदड़ों को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं।
- वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक 20 खम्भों वाला सभा भवन मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं।
- मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ मृतकों का टीला है।
- मूर्ति पूजा का आरम्भ पूर्व आर्य काल से माना जाता है।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त हुआ हैं।

कालीबंगा- कालीबंगा की खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में की गयी थी।

- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में है।
- उत्खनन - बी.बी लाल, वी. के. थापड़ 1953 में
  कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी
- कालीबंगा से एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है।
- सड़कों को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है।
- युग्म शवाधान का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं।
- मृण पट्टिका पर उत्कीर्ण सींगयुक्त देवता की मुहर कालीबंगन से प्राप्त हुई है।
- भूकम्प आने के प्राचीनतम प्रमाण यहीं से प्राप्त हुए हैं।
- वृषभ की ताम्रमूर्ति भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है।
- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।
- लेखन कला की प्रणाली विकसित करने वाली प्रथम प्राचीन सभ्यता सुमेरियन सभ्यता थी।

चन्हूदड़ों -

- खोज एन. जी. मजूमदार
- उत्खनन मैके ने किया।
- सिंधु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था।
- यहाँ मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिंधु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले हैं।

लोथल

- खोज एस. आर. राव (रंग नाथ राव)1954 में की थी
- लघु हड़प्पा
- लघु मोहनजोदड़ों की संज्ञा दी गई है। और लोथल के पूर्वी भाग में एक गोदीबाड़ा का साक्ष्य मिला है।
- बन्दरगाह या जल भण्डार या गोदीबाड़ा यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।
- लोथल का बन्दरगाह ही सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।
- लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार अग्निवेदी पाई गई है।
- लोथल का मिश्र एवं मेसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।
- भारत में उत्तरी काले पॉलिशकृत मृदभाण्ड द्वितीय नगरीकरण के प्रारम्भ के प्रतीक माने जाते हैं।

धौलावीरा- खोज जे.पी. जोशी द्वारा - (1967-68) में मनहर एवं मानसेहरा नदियों के बीच कादिर द्वीप पर की खोज की।

- धौलावीरा एक आयताकार नगर था। जो तीन भागों में विभक्त था।
- धौलावीरा से जल-प्रबंधन के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।
- भारत के विशालतम सिंधु सभ्यता स्थल धौलावीरा तथा राखीगढ़ी हैं।
- धौलावीरा से घोड़े की कलाकृतियों के अवशेष मिले हैं। सिंधु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था।

रोजदी

- रोजदी से हाथी के अवशेष मिले हैं।

- सैन्य प्रशासन में समितियां थी।
- गुल्म छावनी को कहते थे।
- गुल्मदेय- सैनिकों का वेतन
- सेन्य प्रशासनान में सेना 3 प्रकार की होती थी। - राजा की सेना (मोल सेना), किराये की सेना, नगरपालिका की सेना
- तीन प्रकार के युद्ध
  प्रकाश युद्ध - आमने सामने (प्रत्यक्ष) कूट युद्ध
  तुष्नि युद्ध - विष देकर राजा की हत्या

गुप्तचर प्रशासन

- गुप्तचर को गूढ पुरुष कहा गया ।
- गुप्तचर का प्रमुख महामात्यापसर्प होता था।
- गुप्तचर स्त्री-पुरुष दोनों हो सकते थे।

न्याय प्रशासन

- सबसे बड़ा न्यायाधीश राजा होता था ।
- न्यायालय के दो प्रकार (दीवानी और फौजदारी) होते थे ।

प्रांत

- इसका प्रमुख प्रान्तपति । कुमार आर्यपुत्र कहलाता था।
- यह पद राजा परिवार के सदस्य को दिया जाता था।
- प्रान्त का अन्य नाम चक्र था।

पांच प्रान्त व उनकी राजधानियां

1. उत्तरापथ - तक्षशिला
2. प्राची पूर्वी प्रदेश - पाटलिपुत्र
3. अवन्ती - उज्जयिनी
4. तोसलि - धौली (उत्तरी क्षेत्र)
5. दक्षिणापथ - सुवर्णगिरी

अर्द्धस्वायत प्रान्त-

- गिरनार - सौराष्ट्र - चन्द्र गुप्त के समय यहाँ के प्रमुख पुष्पगुप्त वैश्य ने सुदर्शन झील बनायी
- कम्बोज
- भोज
- पित्तनिक
- आटविक

मण्डल - इसका प्रमुख प्रदेष्टा कहलाता था।

स्थानीय - 800 ग्रामों का समूह

द्रोणमुख - 400 ग्रामों का समूह

खार्वटिक - 200 ग्रामों का समूह

संग्रहण - 100 ग्रामों का समूह

ग्राम - ग्राम का प्रमुख ग्रामणी

अध्याय – 6

दिल्ली सल्तनत एवं मुगल साम्राज्य

- **दिल्ली सल्तनत का विस्तार**
  गुलाम वंश से लेकर लोदी वंश
  दिल्ली सल्तनत
  दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे-

गुलाम वंश के शासक -
कुतुबुद्दीन ऐबक)1206-1210 ई. तक)

- भारत में तुर्की राज्य /दिल्ली सल्तनत /मुस्लिम राज्य की स्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।
- गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में की थी । इसने अपनी राजधानी लाहौर में बनाई ।
- ऐबक का अर्थ होता है चंद्रमुखी ।
- ऐबक के राजवंश को कुतुबी राजवंश के नाम से जन जाता है ।
- मुहम्मद गौरी ने ऐबक को अमीर-ए-आखूर अस्तबलों का प्रधान के पद पर नियुक्त किया।
- 1192 ई. के तराईन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।
- तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद गौरी ने ऐबक को अपने मुख्य भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया।
- जून 1206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसालार की उपाधि धारण की यह उपाधि इसे मुहम्मद गौरी ने दी थी ।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया)खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की रात को नजदीक की मस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे ।)खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ इंद्रप्रस्थ में दिल्ली के पास को सैनिक मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाजा (मुहम्मद गौरी के दास) के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- ऐबक ने यल्दौज पर आक्रमण कर गजनी पर अधिकार कर लिया, लेकिन गजनी की जनता यल्दौज के प्रति वफादार थी तथा 40 दिनों के बाद ऐबक ने गजनी छोड़ दिया ।

ऐबक की मृत्यु –

- 1210 ई. में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है ।
- भारत में तुर्की राज्य का वास्तविक संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को मान जाता है ।
- भारत में मुस्लिम राज्य का संस्थापक मुहम्मद गौरी को माना जाता है । स्वतंत्र मुस्लिम राज्य का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को माना जाता है ।

- कुत्तुबुद्दीन ऐबक के दरबार में हसन् निजामी एवं फख्र-ए-मुदब्बिर आदि प्रसिद्ध विद्वान थे ।
- 'कुव्वत-उल-इस्लाम -''अढ़ाई दिन का झोंपड़ा बनवाया। तथा 'कुतुबमीनार 'का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरु करवाया और इल्तुतमिश ने पूरा किया। कुतुबमीनार शेख ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में बनवाया गया है ।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को अपनी उदारता एवं दानी प्रवृति के कारण लाखबख्श (लाखों का दानी)कहा गया है ।
- इतिहासकार मिन्हाज ने कुतुबुद्दीन ऐबक को उसकी दानशीलता के कारण हातिम द्वितीय की संज्ञा दी है ।
- प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करने वाला ऐबक का सहायक सेनानायक बख्तियार खिलजी था ।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- मलिक शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ऐबक का दामाद था, न कि उसका वंशज। इल्तुतमिश का शाब्दिक अर्थ राज्य का रक्षक स्वामी होता है।। उसका समानार्थक शब्द आलमगीर या जहाँगीर विश्व विजेता भी होता है ।
- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बदायूँ यू.पी. का इक्तेदार था।
- इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था। जिसने दिल्ली को अपने राजधानी बनाया ।
- इसने 1229 ई. में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान की उपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्कें टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था)। टंका-48 जीतल)
- इल्तुतमिश यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिए काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।
- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्की सरदारों को मिलाकर तुर्कान-ए-चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक -

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था। इक्ता का अर्थ है – धन के स्थान पर तनख्वाह के रूप में भूमि प्रदान करना ।
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओं की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण - इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन से विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।
- 1235 में ग्वालियर का अभियान -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण । यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।
- इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये ।
- इल्तुतमिश के दरबार में मिन्हाज-उस-सिराज मलिक दाजुद्दीन को संरक्षण मिला ।
- अजमेर की मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था।
- इल्तुतमिश से सम्बन्धित 'हश्म-ए-कल्ब 'या कल्ब-ए-सुल्तानी सुल्तान द्वारा स्थापित सेना को कहा जाता था ।
- इल्तुतमिश को भारत में गुम्बद निर्माण का पिता कह जाता हैं उसने सुल्तानगढ़ी का निर्माण करवाया ।

निर्माण कार्य-

- स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन ऐबक के निर्माण कार्य कुतुबमीनार को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है ।
- इल्तुतमिश ने बदायूँ की जामा मस्जिद एवं नागौर में अतारकिन के दरवाजा का निर्माण करवाया। उसने दिल्ली में एक विद्यालय की स्थापना की।

मृत्यु -

- बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग में इल्तुतमिश बीमार हो गया। इसके बाद इल्तुतमिश की बीमारी बढ़ती गई। अन्ततः अप्रैल 1236 में उसकी मृत्यु हो गई।
- इल्तुतमिश प्रथम सुल्तान था, जिसने दोआब के आर्थिक महत्व को समझा था और उसमें सुधार किया था।
- इल्तुतमिश का मकबरा दिल्ली में स्थित है जो एक कक्षीय मकबरा है ।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई).

- सुल्ताना रजिया)उसका पुरा नाम'जलॉलात उद-दिन-रजिया था(का जन्म -1205 ई. में बदायूँ में हुआ था, उसने उमदत -उल -निस्वाँ की उपाधि ग्रहण की ।
- रजिया ने पर्दा प्रथा को त्यागकर पुरुषों के समान काबा चोगा पहनकर दरबार की कारवाई में हिस्सा लिया।
- दिल्ली की जनता ने उसे 'रजिया सुल्तान' मानकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा दिया। हालांकि वजीर जुनैदी उससे प्रसन्न नहीं था इसलिए इस समय उसने ही रजिया के सिंहासनारोहरण का विरोध किया। रजिया ने उसके बाद वजीर का पद ख्वाजा मुहाजबुद्दीन को दिया।
- वह दिल्ली सल्तनत की पहली एवं आखिरी मुस्लिम महिला शासिका थी।

- अलाउद्दीन द्वारा नियुक्त परवाना-नवीस नामक अधिकारी वस्तुओं की परमिट जारी करता है ।
- शहना-ए-मंडी यहाँ खाधान्नो को बिक्री हेतु लाया जाता था।
- सराए-ए-अदल यहाँ वस्त्र शक्कर जड़ी बूटी मेंवा दीपक का तेल एवं अन्य निर्मित वस्तुएँ बिकने के लिए आती थी।
- अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक निति की व्यापक जानकारी जियाउद्दीन बरनी की कृति तारीखे फिरोजशाही से मिलती है ।
- जैमायत खाना मस्जिद अलाई दरवाजा, सीरी का किला व हजार खम्बा महल का निर्माण अलाउद्दीन ने करवाया था।
- दक्षिण भारत की विजय के अभियान के लिए अलाउद्दीन ने मलिक काफूर को भेजा ।
- घोड़ा दागने एवं सैनिकों का हुलिया लिखने की प्रथा की शुरुआत अलाउद्दीन खिलजी ने की ।
- अलाउद्दीन ने भू-राजस्व की दर को बढाकर उपज का ½ भाग कर दिया ।
- इसने खम्स (लुट का धन)में सुल्तान का हिस्सा ¼ भाग के स्थान पर ¾ भाग कर दिया ।
- सर्वाधिक मंगोल आक्रमण अलाउद्दीन के शासन काल में हुए थे ।
- घोड़े के नाल के आकार कि मेहराब का प्रयोग सर्वप्रथम अलाई दरवाजा (दिल्ली) पर किया गया था ।
- मुनहियान व गुप्तचर गुप्त सूचना प्राप्त करता था ।
- अलाउद्दीन खिलजी ने सेना को नगद वेतन देने एवं स्थायी सेना की नींव रखी । दिल्ली के शासकों में अलाउद्दीन के पास सबसे विशाल स्थायी सेना थी ।
- चित्तौड़ के राजा राणा रत्न सिंह की अनुपम सुन्दर रानी पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया ।
- अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में अमिर खुसरो प्रसिद्ध फारसी कवि था । चितौड़ विजय के दौरान अमीर खुसरो अलाउद्दीन खिलजी के साथ चितौड़ गया था।
- अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा लगाये जाने वाले दो नवीन कर थे ।

(1) **चराई कर** -दुधारू पशुओं पर लगाया जाता था
(2) **गढ़ी कर** - घरों एवं झोपड़ियों पर लगाया जाता था ।

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-1320ई.)

- कुतुबुद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत के खिलजी वंश का शासक अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर ने एक वसीयत नामा पेश किया, जिसमें अलाउद्दीन के पुत्रों (खिज्र खाँ, शल्दी खाँ, मुबारक खाँ) के स्थान पर खिज्रखाँ के नाबालिक पुत्र शिहाबुद्दीन उमर को सुल्तान बनाया गया।
- तुर्की सरदारों ने विद्रोह किया तथा मलिक काफूर की हत्या कर मुबारक खिलजी को नाबालिक सुल्तान घोषित कर नायब-ए-ममलिकात बना दिया।
- मुबारक खिलजी ने शिहाबुद्दीन उमर की हत्या कर दी तथा कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी नाम से सुल्तान बना। इसने स्वयं को खलीफा घोषित किया
- कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ने अपने सैनिकों को छः माह का अग्रिम वेतन दिया था।
- अलाउद्दीन खिलजी की कठोर दण्ड व्यवस्था एवं बाजार नियंत्रण आदि व्यवस्था को उसने समाप्त कर दिया था।
- अप्रैल 1320 ई. को खुसरो ने सुल्तान की हत्या कर दी और नासिरुद्दीन खुसरोशाह के नाम से शासक बना।

नासिरुद्दीन खुसरो शाह (अप्रैल-सितंबर 1320 ई.)

- अप्रैल 1320 में खुसरो ने कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी की हत्या कर दी और नासिरुद्दीन खुसरो शाह के नाम से शासक बना।
- गाजी मलिक जो दीपालपुर का इक्तेदार था के नेतृत्व में खुसरोशाह को मरवा दिया गया तथा तुगलक वंश की स्थापना की गई।
- सल्तनत काल में फवाजिल का तात्पर्य इक्तादारों द्वारा सरकारी खजाने में जमा की जाने वाली अतिरिक्त राशि थी।

तुगलक वंश (1320 से 1414ई)
संस्थापक – ग्यासुद्दीन तुगलक
अन्तिम शासक - नासिरुद्दीन महमूद
गाजी ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)
उपाधि - अल-शहीद (मुहम्मद-बिन-तुगलक के सिक्कों पर ग्यासुद्दीन की यह उपाधि मिलती है।)
विजारत का चरमोत्कर्ष तुगलक वंश के अंतर्गत हुआ ।

ग्यासुद्दीन तुगलक के समय हुये आक्रमण

- इसके समय 1323 ई में पुत्र जौंना खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) ने वारंगल पर आक्रमण किया लेकिन असफल रहा। इस समय वारंगल का शासक प्रताप रुद्र्देव था।
- 1324 ई. में जौंना खाँ ने वारंगल पर पुनः आक्रमण किया इसे (वारंगल) जीतकर इसका नाम तेलंगाना/सुल्तानपुर रखा।
- ग्यासुद्दीन तुगलक का अंतिम सैन्य अभियान बंगाल की गड़बड़ी को समाप्त करना था, क्योंकि बलबन के लड़के बुगरा खाँ ने बंगाल को स्वतंत्र घोषित कर दिया था।
- 1324 ई. में ग्यासुद्दीन ने बंगाल का अभियान किया तथा नासिरुद्दीन को पराजित कर बंगाल के दक्षिण एवं पूर्वी भाग को सल्तनत में मिलाया तथा उत्तरी भाग पर नासिरुद्दीन को अपने अधीन शासक घोषित किया।
- ग्यासुद्दीन तुगलक दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने अपने नाम के साथ 'गाजी' (काफिरों का वध करने वाला) शब्द जोड़ा ।
- शेख निजामुद्दीन औलिया ने ग्यासुद्दीन तुगलक से कहा था की "हुनूज दिल्ली दूर अस्त अर्थात् दिल्ली अभी बहुत दूर है ।

ग्यासुद्दीन तुगलक के द्वारा निर्माण कार्य

- इसने दल्ली के समीप तुगलकाबाद नामक नगर की स्थापना की ।
- दिल्ली में मजलिस-ए-हुक्मरान की स्थापना की ।
- तुगलकाबाद में रोमन शैली में एक दुर्ग का निर्माण किया जिसे छप्पन कोट के नाम से जाना जाता है।

ग्यासुद्दीन की मृत्यु

- 1325 ई. में बंगाल विजय के बाद वापिस दिल्ली लौटते समय दिल्ली से कुछ दूर जौना खाँ द्वारा सुल्तान के स्वागत के लिए बनाये गये लकड़ी के महल से गिर जाने से सुल्तान की मृत्यु हो गयी।

नोट - ग्यासुद्दीन तुगलक ने लगभग सम्पूर्ण दक्षिण भारत को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया था।

हक-ए-शर्ब कर सिंचाई पर लगाया जाता है ।

मुहम्मद बिन तुगलक - Muhammad bin Tughlaq (1325-51 ई.)

- दिल्ली सल्तनत में सबसे अधिक लंबे समय तक शासन तुगलक वंश ने किया, तथा सल्तनत के सुल्तानों में सर्वाधिक विस्तृत साम्राज्य मोहम्मद बिन तुगलक का था
- मुहम्मद बिन तुगलक का साम्राज्य 23 प्रांतों में बंटा हुआ था मुहम्मद बिन तुगलक के समय साम्राज्य का विस्तार हुआ । सल्तनत काल में सबसे बड़ा साम्राज्य विस्तार इसी का था।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने मुस्लिम राजस्व का सिद्धांत दिया तथा अपने सिक्कों पर अल-सुल्तान-जिल्ले-इलाही अंकित कराया।
- मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल के प्रमुख स्त्रोत-
- जियाउद्दीन बरनी द्वारा लिखित पुस्तक तारीख ए फिरोजशाही
- इब्नबतूता का यात्रा वृतांत (रिहला)
- मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के साथ सहिष्णुता का व्यवहाँ र किया।
- मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने योग्यता के आधार पर लोगो को नियुक्त किया।
- मुहम्मद बिन तुगलक का एक हिन्दू मंत्री साईराज था तथा दक्षिण का नायब वजीर धारा भी हिन्दू था ।
- होली के त्यौहार में भाग लेने वाला दिल्ली सल्तनत का प्रथम शासक मुहम्मद बिन तुगलक था।
- 1336 ई में हरिहर प्रथम व बक्का प्रथम ने विजयनगर को स्वतंत्र कराया । तथा विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।
- 1347 ई में अलाउद्दीन बहमन शाह (हसन् कांगू) ने बहमनी राज्य (महाराष्ट्र) को स्वतंत्र कराया तथा बहमनी राज्य की स्थापना की।
- इसके शासनकाल में कान्हा नायक ने विद्रोह कर स्वतंत्र वारंगल राज्य की स्थापना की।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरी को अपनी राजधानी बनाया। तथा देवगिरी का नाम परिवर्तित कर मुहम्मद बिन तुगलक ने दौलताबाद कर दिया ।
- मुहम्मद तुगलक ने कृषि के विकास हेतु '"अमीर-ए-कोही" नामक एक नए विभाग की स्थापना की ।
- मुहम्मद बिन तुगलक को इतिहास में एक "बुद्धिमान मुर्ख शासक" के रूप में जाना जाता है ।
- कहा जाता है की डाक प्रबन्धों के द्वारा मुहम्मद तुगलक के लिए ताजे फल (खुरासान से)एवं पिने के लिए गंगाजल मंगवाया जाता था ।
- एडवर्ड थॉमस ने मुहम्मद बिन तुगलक को प्रिंस ऑफ़ मनीअर्स की संज्ञा दी ।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने जीन प्रभू सूरी नामक जैन साधू को अपने दरबार में बुलाकर सम्मान प्रदान किया था ।
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु पर इतिहासकार "बंदायूनी लिखता है की अंततः लोगों को उससे मुक्ति मिली और उसे लोगों से "
- मुहम्मद बिन तुगलक शेख अलाउद्दीन का शिष्य था । वह सल्तनत का पहला शासक था, जो अजमेर में शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और बहराइच में सालार मसूद गाजी के मकबरे पर गया था ।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने बदायूँ में मीरन मुलहीम, दिल्ली में शेख निजामुद्दीन औलिया, मुल्तान में शेख रुकनुद्दीन, अजुधन में शेख मुल्तान आदि संतों की कब्र पर मकबरे बनवाये ।
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय जिया नक्शबी पहला व्यक्ति था जिसने संस्कृत कथाओं की एक श्रृंखला का फारसी में अनुवाद किया था । इस पुस्तक का नाम तूती नामा था जिसमें एक तोता एक ऐसी विरहिणी नायिका को कहानी सुनाता है, जिसका पति यात्रा पर गया है ।
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु 20 मार्च, 1351 ई. को सिन्ध जाते समय थट्टा के निकट गोडाल में हो गयी।

फिरोज तुगलक

- फिरोज तुगलक का राज्याभिषेक थट्टा के निकट 20 मार्च 1351 को हुआ, पुन : फिरोज का राज्याभिषेक दिल्ली में अगस्त 1351 को हुआ ।
- खलीफा द्वारा इसे कासिम अमीर उल मोममीन की उपाधि दी गयी ।
- बंगाल-फिरोज ने 1353 एवं 1359 ई. में दो बार बंगाल पर असफल अभियान किया।
- जाजनगर (ओडिसा) -1360 ई.- फिरोज ने पुरी के जगन्नाथ मंदिर को लूटा।
- नगरकोट-1361 ई - फिरोज ने काँगड़ा में स्थित नगरकोट पर आक्रमण किया। फिरोज ने यहाँ के ज्वालामुखी मंदिर को लूटा और यहाँ की मुख्य मूर्ति को मदीना भिजवा दिया। यही से 1300 संस्कृत की किताबों को पाया जिसका उसने फारसी में अनुवाद कराया था।

- 'गुलरुखी' शीर्षक से फारसी कविताएँ लिखने वाला सुल्तान सिकन्दर लोदी था ।
- भारत में पोलो खेलने का प्रचलन तुर्कों ने किया था ।
- सल्तनत काल में दस्तार बन्दान उलेमा को कहा जाता था।
- सिकन्दर लोदी ने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को कसाइयों को मांस तौलने के लिए दे दिया था ।
- सिकन्दर लोदी ने मुसलमानों को ताजिया निकलने पर एवं मुसलमान स्त्रियों को पीरों तथा संतों के मजार पर जाने पर रोक लगा दी थी ।
- दिल्ली की मोठ मस्जिद सिकन्दर लोदी के प्रधान मंत्री वजीर मियां भोइया ने 1505 में बनवाई थी ।

इब्राहिम लोदी (1517- 1526 ई.)

- इब्राहीम लोदी, सिकन्दर लोदी का सबसे छोटा बेटा था। सिकन्दर लोदी की मृत्यु के बाद इब्राहिम लोदी 1517 ई. में राजगद्दी पर बैठा और 1526 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया । वह लोदी राजवंश का अंतिम राजा और दिल्ली सल्तनत का अंतिम सुल्तान था।
- 1517-18 ई में इब्राहीम लोदी खातौली (बूंदी) के युद्ध में राणा सांगा से पराजित हुआ।
- तुज़ुक-ए-बाबरी (बाबर की आत्मकथा) के अनुसार दौलत खाँ लोदी आलम खाँ तथा सांगा के दूत बाबर से आगरा पर आक्रमण करने हेतु मिले थे।

❖ **<u>मुगल साम्राज्य एवं राजपूत राज्यों के साथ संबंध</u>**

- **<u>सल्तनत एवं मुगल कालीन प्रशासनिक व्यवस्थाएँ</u>**

<u>मुगल साम्राज्य (1526 - 1707 ई.)</u>

बाबर से औरंगजेब तक

<u>बाबर (1526 – 1530 ई.)</u>

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया।
- लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारुढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की- दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलट कर दिया।
- बाबर ने मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।
- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था ।
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई
- खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।
- चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।
- घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।

  नोट -पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया था ।
- उस्ताद अली एवं मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे । जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था ।
- पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर का भारत पर उसके द्वारा किया गया पांचवा आक्रमण था, जिसमें उसने इब्राहिम लोदी को हराकर विजय प्राप्त की थी और मुग़ल साम्राज्य की स्थापना की थी।
- बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था । भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था ।
- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।
- पानीपत के युद्ध में विजय की खुशी में बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक चाँदी का सिक्का दान में दिया था। अपनी इसी उदारता के कारण बाबर को 'कलन्दर' भी कहा जाता था।
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों को 'सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आपको 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।
- पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था।
- खानवा विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण की थी। इस युद्ध के लिए अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।
- खानवा के युद्ध में मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी, यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुके बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है।

- बाबरनामा में बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है। जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है। साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है।
- बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था।
- बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में 'आरामबाग-' के नाम से जाना जाता है।
- इसमें चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है। यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।
- बाबर को मुबइयान नामक पद्य शैली का जन्म दाता माना जाता है ।
- बाबर को उदारता के कारण कलन्दर की उपाधि दी गयी थी ।
- बाबर प्रसिद्ध नक्शबंदी सूफी ख्वाजा उबेदुल्ला अरहार का अनुयायी था ।
- बाबर के चार पुत्र हिन्दाल, कामरान, अस्करी और हुमायूँ थे। जिनमें हुमायूँ सबसे बड़ा था फलस्वरूप बाबर की मृत्यु के पश्चात् उसका सबसे बड़ा पुत्र हुमायूँ अगला मुग़ल शासक बना।
- पित्रादुरा तकनीक का प्रयोग एत्मादुद्दौला के मकबरे में हुआ है जो ईरानी शैली का है ।

<u>हुमायूँ (1530 ई-1556 ई.)</u>

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुगल वंश के शासन (गद्दी) पर बैठा ।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- हुमायूँ के सबसे बड़े शत्रु अफगान थे, क्योंकि वे बाबर के समय से ही मुगलों को भारत से बाहर खदेड़ने के लिए प्रयत्नशील थे।
- हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खाँ था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।
- हुमायूँ का अफगानों से पहला मुकाबला 1532 ई. में दोहरिया' नामक स्थान पर हुआ। इसमें अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।
- 1532 ई. में हुमायूँ ने शेर खाँ के चुनार किले पर घेरा डाला। इस अभियान में शेर खाँ ने हुमायूँ की अधीनता स्वीकार कर ली
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- चारबाग पद्धति का प्रयोग पहली बार हुमायूँ के मकबरे में हुआ जबकि भारत में पहला बाग युक्त मकबरा सिकन्दर लोदी का था ।
- हुमायूँ के मकबरे को ताजमहल का पूर्वगामी माना जाता है ।
- स्वर्ण सिक्का जारी करने वाला प्रथम मुगल शासक हुमायूँ था ।
- हुमायूँ ने 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खाँ की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुग़ल शासक के अधीन कर लिया । बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौसा के युद्ध में शेर खाँ ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खाँ ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1544 में हुमायूँ ईरान के शाह तहमस्प के यहाँ शरण लेकर पुनः युद्ध की तैयारी में लग गया ।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 को पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"
- बैरम खाँ हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासन् तथा पुनः राजसिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।
- हुमायूँनामा की रचना गुलबदन बेगम नी की थी ।
- हुमायूँ ज्योतिष में विश्वाश करता था इसलिए इसने सप्ताह में सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाए ।

- भारत शासन अधिनियम 1909 के द्वारा मुसलमानों के लिए पृथक् निर्वाचन प्रणाली की व्यवस्था की गई थी।
- "द आर्कटिक होम ऑफ़ द वेदाज" तथा गीता रहस्य नामक ग्रन्थों की रचना बाल गंगाधर तिलक ने मांडले जेल में की थी ये केसरी के सम्पादक भी थे।
- भारत में "शिवाजी उत्सव और गणपति उत्सव" का प्रारम्भ लोकमान्य तिलक द्वारा किया गया। बाल गंगाधर तिलक ने 1893 ई. में महाराष्ट्र में तथा गणपति उत्सव तथा 1895 ई. में शिवाजी उत्सव को आयोजित किया।
- वर्ष 1916 का लखनऊ समझौता कांग्रेस और मुस्लिम लीग से संबंधित है।
- गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी में नियुक्त होने वाले प्रथम भारतीय सत्येन्द्र नाथ सिन्हा थे।
- लोक मान्य तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन्नचन्द्र पाल उग्रवादी विचारधारा की जनक थे।
- वर्ष 1940 में रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना एम. एन. राय ने की थी।
- ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना 1920 में बम्बई में की गई थी। इसकी स्थापना एन. एम. जोशी ने की थी। और इसके प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपतराय थे।
- भारतीय उग्र राष्ट्रवाद का जनक, आधुनिक भारत का निर्माता, भारतीय अशांति के जनक तथा देश भक्तों के राजकुमार बाल गंगाधर तिलक को कहा गया है।
- "भारतीय अशांति" नामक पुस्तक के लेखक वैलेंटाइन शिरोल थे। ये लन्दन टाइम्स के संवादाता थे। इस पुस्तक में इन्होंने बाल गंगाधर तिलक को भारतीय अशांति का जन्मदाता कहा है।
- अनुशीलन समिति की स्थापना क्रांतिकारियों ने की थी।
- साइमन कमीशन के विरोध के समय लाला लाजपतराय पर लाठियों से प्रहार करने वाले सहायक अधीक्षक सांडर्स (लाहौर)की 30 अक्टूबर 1928 ई. को भगत सिंह चन्द्र शेखर आजाद और राजगुरु द्वारा की गई हत्या हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशिएसन् की क्रांतिकारी गति विधि थी।
- सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशिएसन् के मुख्य सदस्य चन्द्रशेखर आजाद 27 फरवरी 1931 ई. को पुलिस के साथ मुठभेड़ में अल्फ्रेड पार्क इलाहबाद में शहीद हुये।
- 23 मार्च 1931 ई. को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को ब्रिटिश सरकार द्वारा फांसी दी गई।
- बंगाल में सूर्यसेन ने इंडियन रिपब्लिकन आर्मी (आई. आर. ए.)की स्थापना की थी। यह संस्था चटगाँव में सक्रिय थी। इसने 1930 ई. में चटगाँव शस्त्रागार लुट को अंजाम दिया।
- बिपिन चन्द्र पाल ने लोकतंत्रात्मक स्वराज के विचार का प्रतिपादन किया।

❖ **<u>गाँधी युग और असहयोग आंदोलन</u>**

- 1916 ई. के लखनऊ अधिवेशन में एनीबेसेंट के सहयोग से कांग्रेस के उदारवादी और उग्रवादी एक हो गए।
- भारत में होमरूल आंदोलन एनीबेसेंट ने आरम्भ किया।
- महात्मा गाँधी ने पहली बार भूख हड़ताल अहमदाबाद मिल मजदूरों के हड़ताल (1918 ई.) के समर्थन में की थी।
- गाँधी जी ने 1918 ई. में गुजरात में कर नहीं आंदोलन चलाया। गाँधी जी ने इस कानून के विरुद्ध 6 अप्रैल 1919 ई. को देशव्यापी हड़ताल करवायी।
- दक्षिणी अफ्रीका से भारत आने के बाद गाँधी जी अपना प्रथम सत्याग्रह चम्पारण (बिहार) में किया।
- 1920 ई. के कांग्रेस के विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता लाला लाजपत राय नी की थी जिसमें असहयोग के प्रस्ताव को रखा गया था।
- रौलेट एक्ट को बिना वकील, बिना अपील, बिना दलील के कानून के नाम से जाना जाता है।
- लॉर्ड चेम्सफोर्ड के शासन काल में गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया था।
- भारत में असहयोग आंदोलन 1920 में शुरू हुआ था।
- रौलेट एक्ट पारित हुआ उस समय भारत के वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड थे।
- अनटू दिस लास्ट नामक पुस्तक के लेखक जॉन रस्किन हैं।
- गदर पार्टी के संस्थापक लाला हरदयाल थे।
- 5 फरवरी 1922 ई. को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर असहयोग आंदोलनकारीयों ने क्रोध में आकर थाने में आग लगा दी। जिससे एक थानेदार एवं 21 सिपाहियों की मृत्यु हो गयी। इस घटना से दुःखी होकर गाँधी जी 11 फरवरी 1922 ई. को असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया।
- स्वामी श्रद्धानन्द ने रौलेट एक्ट के विरोध में लगान न देने के लिए आंदोलन चलने का विरोध किया।
- उड़ीसा के अकाल काल को ब्रिटिश काल के दौरान पड़े अकाल को प्रकोप का समुद्र कहा जाता है।
- 13 अप्रैल 1919 ई. को अमृतसर में जलियाँवाला बाग हत्या कांड हुआ। इस जनसभा में जनरल डायर ने अन्धाधुन्ध गोलियां चलवाई। इस हत्याकांड में लगभग 1000 लोग मारे गए। इस हत्याकांड में हंसराज नामक भारतीय ने डायर को सहयोग दिया था।
- इस हत्याकांड के विरोध में महात्मा गाँधी ने केसर – ए - हिन्द की उपाधि, जमना लाल बजाज ने राय बहादुर, रवींद्रनाथ टैगोर ने सर, (नाईटहुड) की उपाधि वापस लौटा दी।
- जलियाँवाला बाग हत्या कांड की जाच के लिए सरकार ने अक्टूबर, 1919 ई. में लॉर्ड हंटर की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया। इसमें पांच अंग्रेज एवं तीन भारतीय (सर चिमन लाल सीता लवाड, साहबजादा सुल्तान अहमद, एवं जगत नारायण)सदस्य थे।
- जनरल डायर की हत्या उधमसिंह ने लंदन में की थी।
- जलियाँवाला बाग कभी जल्ली नामक व्यक्ति की सम्पति थी।

- रौलेट एक्ट को काला कानून तथा आतंकवादी और अपराध कानून कहा गया है ।
- रौलेट एक्ट को 18 मार्च 1919 को कानूनी रूप दिया गया।
- रौलेट एक्ट के खिलाफ प्रदर्शन ही महात्मा गाँधी का भारत में पहला राजनीतिक आंदोलन था । अर्थात् उनकि राजनीतिक आंदोलन की शुरुआत थी ।
- रौलेट एक्ट के अनुसार किसी भी संदेहास्पद व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाये गिरफ्तार किया जा सकता था । और उसके विरुद्ध न कोई अपील न कोई दलील और न कोई वकील किया जा सकता था । गाँधी जी ने इस कानून के के विरुद्ध 6 अप्रैल 1919 ई. को देशव्यापी सत्याग्रह की तारीख तय की
- "बाल गंगाधर तिलक ने कहा स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है" और इसे मैं लेकर रहूँगा ।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान भारतीय राजनीति का शांतिकाल प्रथम विश्वयुद्ध के काल को कहा जाता है ।
- खिलाफत आंदोलन के संबंध में इंग्लैण्ड भेजे गए शिष्टमण्डल का नेतृत्व डॉ. अंसारी ने किया था । अंग्रेजों के विरुद्ध मुसलमानों का सहयोग व समर्थन करने के लिए गाँधी जी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया था ।
- मुसलमनों ने अंग्रेजों की नीति के विरुद्ध खिलाफत आंदोलन चलाया था ।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में प्रथम विश्वयुद्ध के काल को आंधी से पूर्व शांति का काल कहा गया है ।
- महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम राष्ट्रपिता कहकर सुभाष चंद्र बोस ने संबोधित किया था ।
- 1916 ई. में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ समझौता हुआ था । इस समझौते के बारे में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने कहा था कि " भारत के इतिहास में यह सुनहरा दिन था "।
- 17 अक्टूबर 1919 को समूचे देश में खिलाफत दिवस मनाया गया ।
- गाँधी के नाम से पहले महात्मा शब्द चम्पारण सत्याग्रह के पश्चात जोड़ा गया ।

गाँधी युग और सविनय अवज्ञा आंदोलन :-

- सहयोगी गाँधी 1920 में असहयोग गाँधी बन गए ।
- दिसम्बर 1921 ई. में अहमदाबाद में अधिवेशन में कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को चलाने का निश्चय किया इस आंदोलन का उद्देश्य था - नमक कर तोड़ना ।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरम्भ गाँधी जी ने दांडी यात्रा से किया ।
- स्वराज का नारा गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन के समय दिया था ।
- 12 मार्च 1930 को गाँधी जी ने अपने 78 चुने हुए अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से दांडी समुद्र तट तक यात्रा शुरु की 24 दिनों की लम्बी यात्रा के उपरान्त 5 अप्रैल 1930 को दांडी में गाँधी जी और उनके अनुयायियों ने समुद्र से नमक बनाकर सांकेतिक रूप से नमक कानून को भंग किया नमक कानून को तोड़ने से औपचारिक रूप से सविनय अवज्ञा आंदोलन का सुभारम्भ हुआ ।
- कर मत दो यह नारा सरदार वल्लभभाई पटेल ने दिया था।
- महात्मा गाँधी ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को देशरत्न की उपाधि प्रदान की थी ।
- साइमन कमीशन 1927 में भारत आया था इसका मुख्य प्रावधान संविधान निर्माण योजना था ।
- शारदा एक्ट 1930 का मुख्य प्रावधान विवाह की आयु न्यूनतम का निर्धारण लड़कों के लिए 18 वर्ष व लड़कियों के लिए 14 वर्ष की गई ।
- भारत सरकार अधिनियम 1935 का मुख्य प्रावधान प्रांतीय स्वायत्तता था ।
- अगस्त घोषणा प्रस्ताव 1940 का मुख्य प्रावधान प्रादेशिक स्वशासन से था ।
- क्रिप्स मिशन प्रस्ताव 1942 का मुख्य प्रावधान संविधान सभा की योजना से था ।
- वेवेल योजना 1945 का मुख्य प्रावधान सभी दलों को मिलाकर परिषद् का निर्माण करना था ।
- कैबिनेट मिशन योजना 1946 का मुख्य प्रावधान संघ का निर्माण व प्रान्तों की स्वायत्तता से था । माउण्टबेटन योजना का मुख्य प्रावधान भारत विभाजन से था ।
- स्वराज्य दल का पहला अधिवेशन मार्च 1923 ई. में इलाहाबाद में बुलाया गया ।
- गाँधी जी के दांडी यात्रा को सुभाष चन्द्र बोस ने नेपोलियन का पेरिस मार्च और मुसोलिनी का रोम मार्च कहा है ।
- स्वराज दल की स्थापना 1 जनवरी 1923 ई. में की गयी। इसकी स्थापना का श्रेय देशबंधु चित्तरंजन दास और पण्डित मोतीलाल नेहरु को है ।
- चौरी-चौरा की घटना के समय महात्मा गाँधी बारदोली में थे ।
- नमक सत्याग्रह पर गाँधी जी के गिरफ्तार हो जाने के बाद आंदोलन के नेता के रूप में उनका स्थान अब्बास तैय्यबजी ने लिया था ।
- भारत की समस्या पर विचार करने के लिए 12 नवम्बर 1930 ई. को इंग्लैण्ड में प्रथम गोलमेज सम्मलेन हुआ ।
- द्वितीय गोलमेज सम्मलेन की बैठक सितम्बर 1931 ई. में प्रारम्भ हुआ ।
- तृतीय गोलमेज सम्मेलन की बैठक 17 नवम्बर 1932 ई. को बुलाई गयी ।
- भारत में चलाये गए खिलाफत आंदोलन का प्रमुख कारण तुर्की में खलीफा पद को इंग्लैण्ड द्वारा समाप्त किया जाना था ।
- वर्ष 1925 में विट्ठल भाई पटेल को सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेम्बली का प्रथम भारतीय अध्यक्ष चुना गया था ।
- खिलाफत आंदोलन के प्रमुख नेता शौकत अली और मुहम्मद अली थे ।

- खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने लाल कुर्ती आंदोलन प्रारम्भ किया था जिसका उद्देश्य अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालना था।
- जिया तरंग आंदोलन नागालैण्ड में प्रारम्भ हुआ था।
- सरकार के दमन और कांग्रेस के आंदोलन से उत्पन्न स्थिति को ठीक करने के लिए सरकार और गाँधी जी के बीच 5 मार्च 1931 को गाँधी – इरविन समझौता हुआ था।
- कांग्रेस कार्य समिति द्वारा पूर्ण स्वाधीनता दिवस 26 जनवरी 1930 को मनाया गया था।
- तीनों गोलमेज सम्मेलनों के समय इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री जेम्स रैम्जे मैक्डोनाल्ड था।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर को लन्दन में हुई तीनों गोलमेज सभाओं में अछूतों के प्रतिनिधि के रूप में बुलाया गया था।
- प्रशासनिक सुधारों के अध्ययन के लिए इंग्लैण्ड की सरकार ने 1928 ई. में साइमन कमीशन भारत भेजा। भारतीयों ने इसका विरोध इसलिए किया की कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेज थे।
- अविनय अवज्ञा आंदोलन में पठान सत्याग्रहियों पर गोली चलाने से गढ़वाल रायफल्स ने इन्कार कर दिया था।
- 1928 ई. में आयोजित सर्वदलीय सम्मलेन की सिफारिशों के आधार पर पण्डित मोती लाल नेहरु ने भारत के लिए एक संविधान का प्रारूप तैयार करने का प्रयास किया।
- 1928 ई. में नेहरु रिपोर्ट को पण्डित मोतीलाल नेहरु ने तैयार किया।
- नेहरू रिपोर्ट कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में निरस्त घोषित कर दी गई थी।
- 1922 ई. के कांग्रेस के गया अधिवेशन का सभापतित्व चित्तरंजन दास ने किया था।
- 1922 ई. को मेवाड़ भील आंदोलन का नेता मोतीलाल तेजावत था।
- बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया था।
- सरदार पटेल को सरदार की उपाधि बारदोली की महिलाओं ने प्रदान की थी।
- नेहरु रिपोर्ट को डॉ. जकारिया ने एक परिपक्व तथा राजमर्मज्ञतापूर्ण रिपोर्ट कहा है।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी 1928 ई. को भारत आया। इसे वाइट मैन कमीशन भी कहते हैं।
- साइमन कमीशन लॉर्ड इरविन के समय में भारत आया था, साइमन कमीशन का क्लीमेंट एटली ऐसा सदस्य था, जो बाद में ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बना।
- साइमन कमीशन की नियुक्ति बर्केनहेड ने की थी।
- साइमन कमीशन का समर्थन डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने किया था।
- 17 नवम्बर 1928 को साइमन कमीशन का विरोध करते समय लाठी चार्ज में लगी गहरी चोट के कारण लाला जी की मृत्यु हो गयी।
- चम्पारण का किसान आंदोलन नील की खेती से सम्बन्धित था।
- पाकिस्तान शब्द का सृजन चौधरी रहमत अली ने किया था।
- मई 1934 ई. में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।
- जवाहर लाल नेहरू ने गुट निरपेक्षता नीति का प्रतिपादन किया था।
- राष्ट्रवादी मुस्लिम नेता खान अब्दुल गफ्फार खाँ को सीमांत गाँधी के नाम से जाना जाता है।
- अखिल भारतीय किसान सभा का प्रथम सम्मेलन अप्रैल 1936 ई. लखनऊ में हुआ। इसके अध्यक्ष स्वामी सहजानंद तथा महासचिव एन. जी रंगा चुने गए।
- बम्बई में आल इंडिया ट्रेड यूनियन की स्थापना 1920 ई. में की गई थी।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहला असहयोग आंदोलन 1920 में चलाया था।
- महात्मा गाँधी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर को "महान प्रहरी" की संज्ञा दी थी।
- स्वतंत्र भारत के पहले एवं अंतिम भारतीय गवर्नर चक्रवर्ती सी. राजगोपालाचारी थे।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सरकारी इतिहासकार डॉ. पट्टाभि सीतारमैया थे।
- गाँधी जी की पुस्तकें सत्य के साथ मेरे प्रयोग (आत्मकथा) इंडिया ऑफ माई ड्रीम्स, अनासक्त योग, हिंद स्वराज (1909 ई.) गीता माता, सप्त महाव्रत, (गाँधी जी का वास्तविक दर्शन व पश्चिमी सभ्यता का विरोध) सुनो विद्यार्थियों।
- लॉर्ड कार्नवालिस को नागरिक सेवा का जन्म दाता कहा जाता है।
- जवाहर लाल नेहरू द्वारा भारत शासन अधिनियम 1935 को गुलामी का अधिकार पत्र कहा था।
- मैडम कामा को मदर ऑफ इंडियन रिवोल्यूशन कहा जाता है।
- गाँधी इरविन समझौता (दिल्ली समझौता) 5 मार्च 1931 को हुआ था।
- गोपाल कृष्ण गोखले ने वायसराय लॉर्ड कर्जन की तुलना मुगल बादशाह औरंगजेब से की है।
- महादेव गोविन्द रानाडे को महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है।
- गाँधी जी के प्रमुख समाचार पत्र द ग्रीन पैम्प्लेट (14 अगस्त, 1896 राजकोट) इंडियन ओपेनियन (1903, दक्षिण अफ्रीका में) यंग इंडिया (1919) हरिजन (1932)
- ए. ओ. ह्युम को हरमीट ऑफ शिमला कहा जाता है।
- 1943 ई. में हुए मुस्लिम लीग के कराँची अधिवेशन में विभाजन करो और जाओ का नारा दिया गया था।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महात्मा गाँधी का साथ देने वाले अमेरिकी पत्रकार लुई फिशर थे।
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की पहली बैठक पटना में हुई।

अध्याय – 3

मूल अधिकार

मौलिक अधिकार (भाग -3)(art 12-35)

- समानता का अधिकार (Art- 14-18)
- स्वतंत्रता का अधिकार (Art 19-22)
- शोषण के विरुद्ध अधिकार (Art 23-24)
- धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (Art 25-28)
- सांस्कृतिक व शिक्षा का अधिकार (Art 29-30)
- संवैधानिक उपचारों का अधिकार (Art 32)
- अनुच्छेद 20 व 21 को छोड़कर बाकी अधिकार आपात काल में स्थगित हो जाते हैं।
- मौलिक अधिकारों की अवधारणा को U.S.A(अमेरिका) से अपनाया गया है।

समता का अधिकार :- (अनु. 14-18)

➢ **विधि के समक्ष समता (art -14)-**
विधी के समक्ष समता की अवधारणा ब्रिटेन से प्रभावित हैं । इसका अर्थ है कि सभी व्यक्तियों के लिए एकसमान कानून होगा तथा उन पर एकसमान लागु होगा ।

➢ **धर्म,नस्ल,जाति,लिंग या जन्म-स्थान के आधार पर भेदभाव का प्रतिषेद(art -15)-**
राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान को लेकर विभेद नही करेगा । यह व्यवस्था राज्य और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं ।

➢ **लोक नियोजन के सम्बन्ध में अवसर की समता (अनु०-16)-** राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति से संबंधित विषयों में सभी नागरिकों के लिए अवसर की समानता होगी ।

➢ **अस्पृश्यता का उन्मूलन (अनु.-17)-**
संविधान के अनु० 17 में यह प्रावधान है कि अस्पृश्यता को समाप्त किया जाता है और किसी भी रूप में अस्पृश्यता को बढ़ावा देना दण्डनीय अपराध होगा।

➢ **उपाधियों का अंत (अनु. 18)-**

➢ राज्य सेवा या विधा संबंधी सम्मान के सिवाय अन्य कोई भी उपाधि राज्य द्वारा प्रदान नहीं की जायेगी ।

➢ भारत का कोई नागरिक किसी अन्य देश से बिना राष्ट्रपति की आज्ञा के कोई उपाधि स्वीकार नहीं कर सकता है ।

स्वतन्त्रता का अधिकार(अनु० 19-22) :-

➢ **वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता(अनु. 19):-**
मूल संविधान में सात तरह की स्वतंत्रता का उल्लेख था । अब सिर्फ छह है ।

1.	art 19 (a)	बोलने की स्वतंत्रता /प्रेस की स्वतंत्रता
2.	art 19 (b)	शांतिपूर्वक बिना हथियारों के एकत्रित होने और सभा करने की स्वतंत्रता
3.	art 19 (c)	संघ बनाने की स्वतंत्रता
4.	art 19 (d)	देश के किसी भी क्षेत्र में आवागमन की स्वतंत्रता
5.	art 19 (e)	देश के किसी भी क्षेत्र में निवास करने और बसने की स्वतंत्रता
6.	art 19 (g)	कोई भी व्यापार एवं जीविका चलाने की स्वतंत्रता

➢ art 19 (f) सम्पति का अधिकार,44 वाँ संविधान संशोधन 1978 के द्वारा हटा दिया गया।

अपराधो के सम्बन्ध में अथवा दोष सिद्धि के सम्बन्ध में संरक्षण(अनु. -20):-
इसमें प्रावधान हैं कि –

➢ किसी व्यक्ति को तब तक किसी अपराध के सम्बन्ध में दोषी नही ठहराया जायेगा जब तक उसने किसी प्रचलित विधि का उल्लंघन नही किया हो ।

➢ किसी व्यक्ति को वही दण्ड दिया जायेगा जो अपराध करते समय लागू। अर्थात् बाद में बनाई गई विधी के अनुसार व्यक्ति को दण्डित नही किया जायेगा । लेकिन ये केवल आपराधिक मामलों पर ही लागू होता है। सिविल मामलो के संबंध में अपराध के बाद बनाई गई विधि के अनुसार व्यक्ति को दण्डित किया जा सकता।

➢ (कर चोरी, दिवालिया होना या किसी प्रकार के दिवानी से सम्बंधित प्रावधान)

➢ किसी व्यक्ति को एक अपराध के लिए एक बार ही दण्डित किया जायेगा।

➢ किसी अपराध के लिए किसी व्यक्ति की स्वयं के विरुद्ध साक्षी होने के बाध्य नही किया जाएगा।

प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण (अनु० 21) :-

- इसमे प्रावधान है कि किसी व्यक्ति को उसके प्राण एवं देहिक स्वतंत्रता से विधी के द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार ही वंचित किया जाएगा।
- सर्वोच्च न्यायालय में अनु. 21 को समय-समय पर अधिक से अधिक प्रसारित किया। वर्तमान समय में इसमें निम्नलिखित अधिकार शामिल हो चुके है –

1. निजता का अधिकार।
2. स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार।
3. मानवीय प्रतिष्ठा के साथ जीने का अधिकार।
4. दुर्घटना के समय प्राथमिक उपचार का अधिकार ।
5. निः शुल्क कानूनी सहायता का अधिकार ।
6. हथकड़ी लगाने के विरुद्ध अधिकार ।
7. सूचना का अधिकार ।

8. कारावास में अकेले बंद करने के विरुद्ध अधिकार ।
9. देरी से फांसी के विरुद्ध अधिकार ।
10. फ़ोन टेपिंग के विरुद्ध अधिकार ।
11. विदेश यात्रा की अधिकार
12. नींद का अधिकार

शिक्षा का अधिकार :- (अनु.21-क)

86 वें संविधान संशोधन अधि. - 2002 के माध्यम से इसे संविधान में जोड़ा गया। इसमें प्रावधान है कि राज्य 6-14 आयु वर्ग के बालक को निशुल्क एवं अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध करवाएगा।

इसके संबंध राज्य विधि बनाकर शिक्षा की व्यवस्था करेगा। इसी प्रावधान के तहत निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 पारित किया गया। जिसे 1 अप्रैल 2010 को लागू किया गया।

अनु० 22 :- निरोध एवं गिरफ्तारी से संरक्षण :-इसके तहत व्यक्ति को निम्नलिखित अधिकार प्राप्त होते हैं –

- गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को उसकी गिरफ्तारी का कारण बताना होगा |
- गिरफ्तार किये गए व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह अपनी पसंद के वकील से परामर्श ले सकता है।
- गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को 24 घंटे के भीतर न्यायिक अधिकारी (मजिस्ट्रेट) के सामने प्रस्तुत करना होगा। इन 24 घंटो में यात्रा का समय शामिल नही होगा। लेकिन यदि किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी निवारक निरोध के तहत की जाती है तो उपर्युक्त अधिकार प्राप्त नहीं है। निवारक निरोध के तहत गिरफ्तार व्यक्ति तीन माह तक मजिस्ट्रेट सामने प्रस्तुत की आवश्यकता नहीं है।
- अनु.22 से सम्बंधित अधिकार किसी विदेशी को भी प्राप्त नही होते ।

मानव व्यापार एवं बलात् श्रम पर प्रतिबन्ध (अनु. 23)

- मानव दुर्व्यापार से आशय है। महिला पुरुष बच्चो की वस्तुओं के समान खरीद अथवा बिक्री करना।
- इसमें देह व्यापार के लिए क्रय विक्रय अथवा शरीर के अंगो के क्रय विक्रय आदि को भी शामिल किया जाता है ।
- इसी प्रकार किसी व्यक्ति से बलात् श्रम नही करवाया जा सकता । बलात् श्रम से आशय है, व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध उससे कार्य करवाना।

बाल श्रम का प्रतिषेध (अनु. 24)

- 14 से 18 वर्ष की आयु के किसी बालक को कारखानों या अन्य किसी जोखिम वाले कार्य में नियोजित नहीं किया जा सकता।

- **धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (अनु. 25-28):-**
- अंतः करण की और धर्म को मानने,आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता (अनु. 25)
- अनु. 25 में यह भी प्रावधान है कि कृपाण धारण करना और लेकर चलना सिख धर्म का मुख्य अंग माना जाएगा।

धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता(अनु० 26) :-

व्यक्ति को अपने धर्म के लिए संस्थाओ की स्थापना व पोषण करने, विधि –सम्मत सम्पति के अर्जन, स्वामित्व व प्रशासन का अधिकार है ।

- अनु. 25 जहाँ व्यक्तिगत अधिकार से सम्बंधित हैं । जबकि अनु. 26 समूह से सम्बंधित है ।

अनु. 27 – धर्म से सम्बंधित अथवा किसी धर्म विशेष की अभिवृद्धि के सम्बन्ध में करो के संदाथ अथवा करो के देने की स्वतंत्रता

- इसमें प्रावधान है कि किसी भी व्यक्ति को किसी धर्म विशेष की अभिवृद्धि के उद्देश्य से कर देने के लिए बाध्य नही किया जा सकता ।
- सर्वोच्च न्यायालय ने इसके सम्बन्ध में निर्णय दिया है कि राज्य कर की राशि को किसी एक धर्म या सम्प्रदाय की अभिवृद्धि के लिए खर्च नही कर सकता ।

अनु. 28 :- शिक्षण संस्थाओ में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता:

निम्नलिखित प्रकार के शैक्षणिक संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में प्रावधान है कि-

अनु. 28 के अनुसार राजकीय निधि से संचालित किसी भी शिक्षण संस्था में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा प्रदान नहीं की जाएगी। इसके साथ ही राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त या आर्थिक सहायता प्राप्त शिक्षण संस्था में किसी व्यक्ति को किसी धर्म विशेष की शिक्षा ग्रहण करने के लिए बाध्य नही किया जा सकेगा ।

(5) संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार (अनु. 29 व 30):-

अनु. 29 में यह प्रावधान कि भारत के किसी क्षेत्र के किसी निवासी नागरिकों अथवा इसके किसी भाग की जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है। तो उसे बनाए रखने का अधिकार होगा।

अनु. 29 धार्मिक अल्पसंख्यकों से सम्बंधित नहीं है। यह भाषा लिपि अथवा संस्कृति के आधार पर अल्पसंख्यकों की बात करता है । यह व्यवहारिक रूप में सभी धर्मो एवं सभी नागरिकों पर लागु होता है । लेकिन ऐसे नागरिकों को अधिकार नही देता, जो नागरिक तो हैं लेकिन निवासी नहीं हैं ।

अनु. 30 :- के अनुसार धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गो को अपनी रुचि की शैक्षणिक संस्थाओ की संस्थापना तथा उनके प्रशासन का अधिकार होगा । राज्य आर्थिक सहायता देने में एसी संस्थाओ के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नही करेगा ।

(6) संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनु. 32)

संवैधानिक उपचारों के अधिकार को डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने संविधान की आत्मा कहा है ।

- इस बार आवेदन करने के बाद आप **ऑनलाइन खाद्य सुरक्षा लिस्ट राजस्थान 2022** में अपना नाम चेक कर सकते हैं ।
- मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी ने वित्तीय वर्ष 2022-23 में 10 लाख लोगो का नाम खाद्य सुरक्षा में जोड़ने की घोषणा की है ।
- आप अपने नजदीकी ई मित्र केंद्र पर जाकर इस योजना के लिए आवेदन कर सकते हैं ।
- अगर आपको आवेदन करने में कोई दिक्कत आती है तो आप सार्वजनिक वितरण प्रणाली हेल्पलाइन नंबर पर सम्पर्क कर सकते हैं ।
- आवेदन करते समय आपको स्वघोषणा पात्र देना अनिवार्य होगा ।
- आवेदन करने के बाद अगर आपका नाम लिस्ट में आ जाता है तो आपको राजस्थान राशन कार्ड (Rajasthan Ration Card) जारी कर दिया जाता है ।
- राशन कार्ड बनने के बाद आप सरकार के द्वारा दिया जाने वाला राशन जैसे की चावल, गेहूं, चीनी आदि कम दर पर प्राप्त कर सकते हैं ।

खाद्य सुरक्षा योजना राजस्थान पात्रता 2022

केवल वे ही लोग इस योजना में आवेदन कर सकते हैं जो खाद्य सुरक्षा योजना योग्यता रखते हैं. आवेदन करने के लिए पात्रता इस प्रकार हैं:

- आवेदक राजस्थान का स्थाई निवासी होना चाहिए.
- अन्तोदय परिवार
- BPL परिवार
- एकल महिलाएं, कचरा बीनने वाले परिवार, उत्तराखंड त्रासदी वाले परिवार
- साइकिल रिक्शा चालक, कुली, अन्नपूर्णा योजना के लाभार्थी
- आस्था कार्ड धारी परिवार, घुमंतु अर्ध घुमंतु जातियां
- श्रम विभाग में पंजीकृत निर्माण श्रमिक
- पंजीकृत अनाथालय एवं वृद्ध आश्रम एवं कुष्ठ आश्रम
- पालनहार योजना अंतर्गत लाभार्थी बच्चे व पालनहार परिवार, वृद्ध दंपत्ति जिनके केवल दिव्यांग संतान हो या निसंतान हो
- भूमिहीन कृषक, सीमांत कृषक, लघु कृषक
- एड्स से ग्रसित व्यक्ति एवं उनका परिवार

सिलिकोसिस रोग से ग्रसित व्यक्ति एवं परिवार

अध्याय – 6

मुद्रा एवं बैंकिंग

भारत में बैंकिंग

- ➢ भारत में स्थापित पहली बैंक Bank of Hindustan थी इसकी स्थापना Alexandey and Company 1770 ई. में की थी कुछ समय बाद यह बैंक बंद हो गई।
- ➢ इसके बाद देश में निजी और सरकारी अंशधारियों द्वारा तीन प्रेसीडेंन्सी बैंकों की स्थापना की गई - वर्ष 1806 में बैंक ऑफ बंगाल (Bank of Bengal.), वर्ष 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे (Bank of Bombay) तथा वर्ष 1843 में बैंक ऑफ मद्रास (Bank of Madras) ।
- ➢ इन तीनों बैंकों पर बैंक ऑफ मद्रास अपना नियंत्रण रखती थी । बाद में इन बैंकों के कार्यों को सीमित कर दिया गया । वर्ष 1921 में इन तीनों बैंकों को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया (Impe rial Bank of India) की स्थापना की गई और । जुलाई, 1955 को राष्ट्रीयकरण के उपरान्त इसका नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया रख दिया गया ।
- ➢ भारत में पहली सीमित देयता वाला भारतीय बैंक अवध कमर्शियल बैंक था जिसकी स्थापना फैजाबाद में वर्ष 1881 में की गयी थी ।
- ➢ उसके बाद वर्ष 1894 में लाहौर में पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना हुई जो पहला पूर्ण रूप से प्रथम भारतीय बैंक था।

भारत में स्थापित प्रमुख बैंक व उनकी स्थापना

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष
द बैंक ऑफ हिन्दुस्तान	1770
बैंक ऑफ बंगाल	1806
बैंक ऑफ बॉम्बे	1840
बैंक ऑफ मद्रास	1843
इलाहाबाद बैंक	1865
एलाइन्स बैंक ऑफ शिमला	1881
अवध कॉमर्शियल बैंक	1881
पंजाब नेशन बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
पंजाब एंड सिंध बैंक	1908
बैंक ऑफ बड़ौदा	1909
सेंण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911
बैंक ऑफ मैसूर	1913
इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921
भारतीय रिजर्व बैंक	1935
भारतीय स्टेट बैंक	1955

- **मुद्रा के आधुनिक रूप**

मुद्रा (Money)

- मुद्रा वह केंद्र है जिसके चारों ओर किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की चक्रीय गति होती है। आर्थिक प्रणाली में

मुद्रा का एक महत्वपूर्ण कार्य 'वस्तुओं तथा सेवाओं के लेनदेन को सरल बनाना है।

- इसमें बैंकों की विशेष भूमिका होती है। मिल्टन फ्रीडमैन के अनुसार, "मुद्रा ऐसी कोई भी संपत्ति है जिसमे क्रयशक्ति के अस्थाई निवास के रूप में कार्य करने की क्षमता हो।"

मुद्रा के प्रकार (Type of Money)

मुद्रा के दो प्रकार हैं जो निम्नलिखित हैं -

(A) वैधानिक मुद्रा (Legal currency)

वह मुद्रा जिसका निर्गमन सरकार या भारतीय रिजर्व बैंक ने किया है। वैधानिक मुद्रा में रिजर्व बैंक धारक को उतनी रकम अदा करने का वचन देता है, जितने मूल्य की करेंसी है।

(B)साख मुद्रा (Credit money)

वह मुद्रा जिसका भुगतान चेक या अन्य माध्यमों से किया जाता है। यह एक ऐच्छिक मुद्रा है, जिसे स्वीकार करना व्यक्ति की बाध्यता नहीं है। सामान्यतः साख मुद्रा के 5 रूप प्रचलित हैं-

- प्रतिज्ञा पत्र (Bond)
- चेक (Cheque)
- हुंडी (Hundi)
- विनिमय-पत्र (Exchange Deed)
- बैंक-ड्राफ्ट (Bank Draft)

सांकेतिक मुद्रा (Token money)

यह वह मुद्रा होती है जिसका आंतरिक भारतीय मूल्य उसके अंकित मूल्य से कम होता है। यह सस्ती धातु से बनी होती है। उदाहरण-भारतीय सिक्के।

प्रमाणिक मुद्रा (Standard money)

यदि सिक्के का वास्तविक एवं अंकित मूल्य बराबर हो तो उसे 'प्रमाणिक मुद्रा' कहते हैं सोने और चांदी के सिक्के प्रमाणिक मुद्रा ही होते हैं।

प्लास्टिक मनी (Plastic money)

विभिन्न बैंकों, वित्तीय संस्थाओं तथा अन्य कंपनियों द्वारा जारी किए गए डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड आदि को 'प्लास्टिक मनी' कहा जाता है। डेबिट कार्ड के द्वारा बैंक खाते में जितनी धनराशि जमा हो उतने तक ही खरीदारी या निकासी की सुविधा होती है, जबकि क्रेडिट कार्ड से बैंक खाते में धनराशि न होने पर भी कुछ निकासी खरीदारी की जा सकती है।

नजदीकी मुद्रा (Near money)

वह संपत्ति, जो ऐसे रूप में हो जिसे जल्दी तथा आसानी से मुद्रा में परिवर्तित किया जा सकता है, नजदीकी मुद्रा या समीपस्थ मुद्रा कहलाती है जैसे- सोना और चांदी।

गर्म मुद्रा (Hot money)

इस मुद्रा को हॉट मनी या गर्म मुद्रा कहां जाता है जिसमें वित्तीय बाजार में शीघ्र पलायन कर जाने की प्रवृत्ति होती है अर्थात् जिस स्थान पर लाभ मिलने की संभावनाएं अधिक होती है, उसी स्थान पर यह स्थानांतरित हो जाती है, जैसे- शेयर बाजार में लगी विदेशी मुद्राएं। गर्म मुद्रा के अंतर्गत निवेशक अल्पकालीन लाभ को ध्यान में रखते हुए वित्तीय परिसंपत्तियों एवं प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं।

दुर्लभ मुद्रा एवं सुलभ मुद्रा (Hard currency and soft currency)

विश्व बाजार में जिस देश की मुद्रा की आपूर्ति की अपेक्षा मांग अधिक होती है उसे दुर्लभ मुद्रा (Hard currency) कहते हैं, जैसे- अमेरिकी डॉलर, ब्रिटिश पौंड, यूरोपीय संघ का यूरो इत्यादि।

इसके विपरीत जिस देश की मुद्रा की आपूर्ति के अपेक्षा मांग कम होती है, वह अंतरराष्ट्रीय बाजार में बड़ी आसानी से उपलब्ध हो जाती है, उसे सुलभ मुद्रा (Soft currency) कहते हैं।

कॉशन मनी (Caution money)

किसी भी संविदा और दायित्व को पूर्ण करने के लिए जमानत के तौर पर मांगी जाने वाली राशि को 'कॉशन मनी' कहते हैं।

धातु मुद्रा (Metallic money)

धातु से बनी मुद्रा को धातु मुद्रा कहते हैं। इस मुद्रा की विशेषता यह है कि इसमें बाह्य मूल्य (Face Value) के साथ-साथ आंतरिक मूल्य (Intrinsic Value) भी सन्निहित होता है। बाह्य मूल्य से आशय मुद्रा पर अंकित मूल्य जबकि आंतरिक मूल्य से आशय धातु के निहित मूल्य से होता है। पहले सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं का चलन मुद्रा के रूप में था, जबकि वर्तमान में गिल्ट, तांबा आदि धातुओं का प्रयोग धातु मुद्रा में किया जाता है। धातु मुद्रा को सिक्का भी कहते हैं।

कागजी मुद्रा (Paper money)

कागजी मुद्रा एक विशेष किस्म के कागज पर लिखित प्रतिज्ञा पत्र है [मैं धारक को...... (जितने मूल्य का नोट है) अदा करने का वचन देता हूं] है जिसके माध्यम से निर्गमन अधिकारी (केंद्रीय बैंक या सरकार) धारक को उस पर अंकित राशि देने का वचन देता है। इसका निर्गमन एक निश्चित विधान के अंतर्गत किया जाता है। इसमें केवल बाह्य मूल्य होता है, आंतरिक मूल्य बहुत कम होता है।

भारत की राष्ट्रीय मुद्रा

- भारतीय रुपया (प्रतीक चिह्न ₹ कोड : INR) भारत की राष्ट्रीय मुद्रा है।
- इसका बाजार नियामक और जारीकर्ता भारतीय रिजर्व बैंक है।
- भारतीय मुद्रा के लिए एक अधिकारिक प्रतीक चिह्न जुलाई, 2010 में चुना गया था जिसे IIT गुवाहाटी के असिस्टेंट प्रोफेसर डी. उदय कुमार ने डिजाइन किया था।

वाणिज्यिक बैंकों पर नैतिक प्रभाव होता है । अतः सामान्यतः ये बैंक केंद्रीय बैंक साख के विस्तार या संकुचन करने की सलाह को मान लेते हैं । मुद्रास्फीति के समय बैंकों को साख के प्रवाह को सीमित करने तथा अवस्फीति के दौरान उदारता से ऋण देने का केंद्रीय बैंक परामर्श देता है ।

NOTE- नैतिक प्रभाव में मनाने तथा दबाव डालने का मिश्रण पाया जाता है । केंद्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को अपनी मौद्रिक नीति का पालन करने के लिए मनाता है । अन्यथा उन पर दबाव डालकर अपनी नीति को मनवाता है यदि यह असफल होता है तो केंद्रीय बैंक प्रत्यक्ष कार्यवाही कर सकता है जिसमें वाणिज्यिक बैंकों की मान्यता रद्द (Derecognition) शामिल है । मौद्रिक नीति का एक उपकरण होने के कारण नैतिक प्रभाव एक मात्रात्मक उपाय भी है और एक गुणात्मक उपाय भी यद्यपि इसे गुणात्मक उपाय की श्रेणी में रखा जाता है ।

चयनात्मक साख नियंत्रण (Selective Credit Control)

- केंद्रीय बैंक की अर्थव्यवस्था के विशेष क्षेत्रों के पक्ष या विपक्ष में एक भेदमूलक नीति है ।
- विशेष क्षेत्रों (प्राथमिक क्षेत्र - कृषि) में साख के प्रवाह को प्रोत्साहित किया जाता है ताकि उनमें आर्थिक गतिविधियों के स्तर को बढ़ाया जा सके ।

भारतीय स्टेट बैंक (SBI)

- आजादी के उपरान्त वर्ष 1955 में Imperial Bank of India को भारत सरकार ने अपने अधीन ले लिया एवं इसका नाम परिवर्तित कर state Bank of India कर दिया गया तत्पश्चात् कुछ अन्य बड़े बैंकों को SBI के सहायक बैंकों के रूप में परिवर्तित कर दिया गया ।
- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में भारतीय स्टेट बैंक सबसे बड़ा बैंक है ।
- SBI के राष्ट्रीयकरण के समय इसके साथ अन्य 8 बैंकों को SBI के सहायक बैंक (Associate Bank) के रूप में बदल दिया गया था और इसे स्टेट बैंक समूह (State Bank Group) का नाम दिया गया ।
- 1 अप्रैल, 2017 को इन सबका भारतीय स्टेट बैंक में विलय कर दिया गया ।

SBI के 7 सहायक बैंक थे-

1. स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर (वर्ष 1955 में बीकानेर और जयपुर के अलग - अलग स्टेट बैंक थे जिन्हें बाद में मिलाकर एक कर दिया गया)
2. स्टेट बैंक ऑफ पटियाला
3. स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद
4. स्टेट बैंक ऑफ मैसूर
5. स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर
6. स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र (इसका SBI में वर्ष 2008 में विलय किया गया)
7. स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर (इसका SBI में वर्ष 2010 में विलय किया गया) ।

भारतीय महिला बैंक जिसका गठन वर्ष 2013 में किया गया था, का भी । अप्रैल, 2017 को भारतीय स्टेट बैंक में विलय कर दिया गया ।

बैंकों के राष्ट्रीयकरण का इतिहास

- आजादी के दौरान भारत में कार्यरत सभी बैंक निजी क्षेत्र के थे तथा बैंकिक क्षेत्र में धोखाधड़ी चरम पर थी बैंकों का विस्तार मात्र शहरी क्षेत्रों में ही हो रहा था। एवम् समाज का उच्च वर्ग ही बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ा था अतः बैंकों के ग्रामीण क्षेत्रों के विस्तार के उद्देश्य से समाज के निम्न वर्ग को भी बैंकिक व्यवस्था से भी जोड़ने के उद्देश्य से एवम् जमाकर्ता के हितों को संरक्षित रखने के उद्देश्य से बैंकों के राष्ट्रीयकरण का निर्णय लिया ।
- बैंकों को राष्ट्रीय नियोजन का मुख्य धारा से जोड़ने के उद्देश्य से सरकार ने 19 जुलाई, 1969 को 14 बड़े व्यापारिक बैंकों (जिनकी जमाएँ 50 करोड़ रु से अधिक थीं) का राष्ट्रीयकरण कर दिया ।
- **ये बैंक थे-**

1. सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया
2. पंजाब नेशनल बैंक
3. बैंक ऑफ इण्डिया
4. यूनाइटेड कमर्शियल बैंक
5. सिण्डीकेट बैंक
6. केनरा बैंक
7. बैंक ऑफ बड़ौदा
8. यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया
9. यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
10. इलाहाबाद बैंक
11. देना बैंक

12 इण्डियन बैंक
13 इण्डियन बैंक
14 बैंक ऑफ महाराष्ट्र को सरकार

भारत में बैंकों का वर्गीकरण

भारत में बैंकों को दो प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता

1. अनुसूचित बैंक (scheduled Bank)
2. गैर अनुसूचित बैंक (Non scheduled Bank)

Non- Scheduled Bank, RBI की अनुमति के बिना भी स्थापित हो जाती हैं एवम् इसका संचालन भी RBI नहीं करती इससे भिन्न अनुसूचित बैंक, RBI की अनुमति से स्थापित होती हैं एवम् इनका संचालन RBI करती हैं, अनुसूचित बैंक वह बैंक हैं जो RBI अधिनियम 1934 के द्वितीय अनुसूची में सूचिबद्ध हैं इन बैंको को निम्नलिखित दिशा निर्देशों का अनुपालन करना होता है ।

1. इनकी किसी भी क्रिया से ग्राहकों को क्षति नहीं पहुंचनी चाहिए ।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

गया है कि पीडीएस प्रणाली जितनी दक्षिण भारत में लोकप्रिय रही है उतनी उत्तर भारत में नहीं। इसके अतिरिक्त पहाड़ी राज्यों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की स्थिति और भी खराब है। वहीं अगर पीडीएस की लोकप्रियता की तुलना शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में की जाए तो पीडीएस का झुकाव शहरी क्षेत्रों की ओर अपेक्षाकृत अधिक रहा है। हालांकि 1990 के बाद, ग्रामीण क्षेत्रों में उचित मूल्य की दुकानों का काफी अधिक नेटवर्क फैलाया गया किन्तु वह अपेक्षानुरूप परिणाम नहीं दे पाया है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में रिसाव (लीकेज) की समस्या काफी गंभीर है जिसका मुख्य कारण सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार है। एनएसएसओ के 68वें चक्र के अनुसार भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली में रिसाव का अखिल भारतीय स्तर लगभग 48 प्रतिशत है।

अध्याय – 10

शिक्षण विधियाँ

सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति

सामाजिक विज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

- सामाजिक अध्ययन विषय को आरंभ करने का श्रेय अमेरिका को है।
- आरंभ में सामाजिक अध्ययन का नाम उन विषयों के समुह को दिया गया जिसमें इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र शामिल थे। यह नामकरण 1892 में हुआ ।
- बाद में इसमें समाजशास्त्र भी जोड़ा गया।
- सामाजिक अध्ययन के इस स्वरूप को सरकार की ओर से मान्यता 1916 में 'Committe on the Social Studies of Secondry education 'के प्रतिवेदन में दी गई और इसे एक विषय के रूप में स्वीकार करने का सुझाव दिया गया।
- 1921 में इस विषय के संबंध में विस्तृत अध्ययन के लिए अमेरिका में राष्ट्रीय विकास परिषद् का गठन किया गया।
- 1934 में 'सामाजिक अध्ययन ' पर एक कमीशन की नियुक्ति की गई। जिसके उपरांत इस क्षेत्र में बहुत से अनुसन्धान हुए और सामाजिक अध्ययन के एकीकृत स्वरूप का विकास हुआ और इसे एक क्षेत्र अध्ययन के रूप में मान्यता दी गई।
- अमेरिकी विद्यालयों में 1920 से 1955 का समय सामाजिक अध्ययन का स्वर्णकाल माना जाता है।
- भारत में माध्यमिक शिक्षा आयोग - डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर आयोग (मद्रास विवि के कुलपति की अध्यक्षता में सितंबर 1952) ने छात्रों के सामाजिक वातावरण से अनुकूलन के लिए इस विषय का अध्यापन अनिवार्य माना।
- भारत में सर्वप्रथम पंजाब सरकार ने अपने शिक्षा सलाहकार बोर्ड की सिफारिश को मानते हुए 1949 ई. राज्य के सभी स्तरो पर सामाजिक अध्ययन का अध्यापन निश्चित किया।
- वर्ष 1950 - 1965 के मध्य भारत में प्रायः सभी राज्यों में इस विषय को विद्यालयी शिक्षा में शामिल कर लिया गया।
- 1952 - 53 में मुदालियर आयोग ने सर्वप्रथम विद्यालयों के लिए इस विषय की सिफारिश की। इन्होंने सामाजिक पर्यावरण के एकीकृत विषय के रूप में शुरू किया।
- इस आयोग ने इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि विषयों का एक इकाई के रूप में अध्ययन करने की सिफारिश की।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ :-

- सामाजिक अध्ययन शब्द सामाजिक और अध्ययन से मिलकर बना है।
- सामाजिक का अर्थ समाज के लिए या समाज द्वारा अर्थात समाज द्वारा समाज के लिए अध्ययन सामाजिक अध्ययन

के अंतर्गत मनुष्य का मनुष्य से तथा उसका वातावरण के साथ स्थापित संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

- यह मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष, सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, ऐतिहासिक को स्पर्श करता है।
- इसमें विविधता है जो मानव को अनुभव ग्रहण करने में मदद करता है।

सामाजिक अध्ययन की परिभाषाएँ :-

1. जे. एफ. फारेस्टर :- "सामाजिक अध्ययन उस समाज का अध्ययन है, जिसमें रहकर छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। "
2. NCERT के अनुसार :- "सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा सामाजिक और भौतिक वातावरणों के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है। "
3. जेम्स हामिंग महोदय :- "सामाजिक अध्ययन ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामाजिक संबंधों तथा अन्त्तसंबंधों का अध्ययन है। "

सामाजिक अध्ययन की विशेषताएं :-

- इसकी विषय वस्तु का केन्द्र मानव है। यह मनुष्यों और उसके समुदायों का अध्ययन करता है।
- यह मानवीय संबंधों पर बल देता है।
- यह सामाजिक संस्थाओं की उत्पत्ति और उनके विकास की जानकारी देता है।
- यह उत्तम नागरिकता के विकास में सहायता प्रदान कर लोकतंत्र को सफल और सुरक्षित बनाने में सहायक है।
- यह मानव और उसके वातावरण के बीच होने वाली अंत क्रिया का अध्ययन है।
- यह छात्र छात्राओं को उस वातावरण को समझने और उनकी व्याख्या करने में सहायता प्रदान करता है। जिसमें वे पैदा हुए और विकसित हुए।
- यह मानव जीवन में रहन - सहन के ढंगो, मूलभूत आवश्यकताओं क्रियाओं के ज्ञान से संबंधित है।

सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य :-

- मानव जीवन के विकास का अध्ययन करना।
- उत्तम नागरिकता एवं राष्ट्रीयता का विकास करना।
- सामाजिक विज्ञान में विषयों के विभाजन की कठोरता को समाप्त करके ज्ञान की सापेक्षता पर बल दिया जाता है।
- अच्छी आदतों एवं उचित कौशलों का विकास करना।
- विद्यार्थियों का समाजीकरण कर सामाजिक चिंतन का विकास करना।
- विभिन्न संस्कृतियों, रीति - रिवाजों समाज की परंपराओं के लिए रुचि, महत्व और ज्ञान विकसित करना।

सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु :-

1. **प्राथमिक विषय :-**
   इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र
2. **द्वितियक विषय :-**
   समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र

सामाजिक अध्ययन विषय का क्षेत्र :-

- मानवीय संबंधों का अध्ययन
- समसामयिक घटनाएँ
- समाज संबंधी अध्ययन
- नागरिकता की शिक्षा
- ललित कलाओं का अध्ययन
- अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन
- आधुनिक समस्याओं, विवादस्पद प्रश्नों का अध्ययन

अन्य विषयों के साथ सामाजिक अध्ययन का संबंध :-

(1) भाषा के साथ संबंध :- भाषा साहित्य से संबंधित है और साहित्य का समाज के साथ घनिष्ठ संबंध होता है। निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता, इत्यादि साहित्य के स्रोत है जिसके माध्यम से समाज में विभिन्न विषयों को पढ़ाया जाता है।

(2) गणित के साथ संबंध :- इतिहास में कालक्रम को भूगोल में भौगोलिक घटना को और अर्थशास्त्र में विभिन्न आर्थिक सिद्धांतों को समझने के लिए गणित के ज्ञान आवश्यक है।

(3) कला के साथ संबंध :- विभिन्न चित्र, मूर्तिकला, कला, इत्यादि समाज के विभिन्न राज्यों और संस्कृतियों से संबंध रखती है।

(4) प्रौद्योगिकी के साथ संबंध :- इस वैश्विक दुनिया में हमारा समाज टीवी, रेडियो, मोबाईल Computer इत्यादि से सीधे या सामाजिक रूप से जुडा हुआ है। इन सभी का समाज पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक अध्ययन की प्रकृति :-

- सामाजिक संबंधों का अध्ययन
- मानवीय जीवन का अध्ययन
- सामाजिक प्राणी के रूप में मानव का अध्ययन
- सामाजिक एवं भौगोलिक वातावरण का अध्ययन
- सामाजिक अध्ययन एकीकृत उपागम
- क्षेत्रीय अध्ययन

सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ

पर्यटन/भ्रमण विधि

पर्यटन या भ्रमण विधि एक शिक्षण अधिगम विधि है। भ्रमण विधि के द्वारा बालकों को विद्यालय से बाहर पर्यटन पर ले जाया जाता है तथा वहां बालक चीजों का अवलोकन करके खुद से सीखता है।

पर्यटन/भ्रमण विधि के जनक पेस्टोलॉजी हैं।

पर्यटन विधि से पौधों, जानवरों, प्रकृति, पहाड़ों, ऐतिहासिक इमारतें, फसलों इत्यादि विषय का सार्थक अधिगम कराया जा सकता है।

एक उदाहरण के द्वारा समझते हैं:- कोई बालक को कक्षा कक्षा में उसके शिक्षक यह बताते हैं कि हाथी बहुत बड़ा जानवर होता है। उसके चार मोटे-मोटे पैर तथा एक बड़ा-सा सूढ होता है। हाथी के पास दो बड़े-बड़े कान भी होता है। तो बालक यह बात को सुनता है एवं उसे रट लेता है। कुछ दिनों बाद बालक उन बातों को भूल जाता है। लेकिन

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/ny6pbb 1 web.- https://shorturl.at/iiVKO

FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
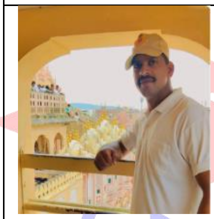	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others......

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

WhatsApp करें - https://wa.link/ny6pbb

Online Order करें - https://shorturl.at/liVKO

Call करें - 9887809083